गेहूँ के महत्वपूर्ण रोग और उनकी रोकथाम

कृषि कुंभ (अप्रैल, 2023),
खण्ड 02 भाग 11, पृष्ठ संख्या 31–33

गेहूँ के महत्वपूर्ण रोग और उनकी रोकथाम

[1]अर्चित कुमार, [2]हरीश कुमार एवं [3]ज्योति,
[1]बीएससी, [2,3]असिस्टेंट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस आईआईएमटी यूनिवर्सिटी मेरठ, भारत।
Email Id: drplantpathology@gmail.com

प्रस्तावना

वानस्पतिक नाम–ट्रिटिकम एस्टिवम कुल–ग्रेमिनी गेहूँ अन्न की एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण फसल है। यह मांसाहारी और शाकाहारी दोनों ही प्रकार के लोगों का प्रिय भोजन है। संसार के कई अन्य देशों की भाँति हमारे देश में भी अति प्राचीन काल से गेहूँ की खेती होती आ रही है और यद्यपि सभी विद्वान् गेहूँ के जन्म स्थान के विषय में एकमत नहीं हैं, लेकिन प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिक बेबीलोव के मतानुसार मुलायम गेहूँ का जन्म–स्थान निःसन्देह उत्तरी भारत ही है।

गेहूँ विभिन्न प्रकार की जलवायु में पनपने का अद्भुत् गुण रखता है और इसी गुण के कारण आज विश्व में कोई ऐसा देश न मिलेगा जहाँ गेहूँ की खेती न की जाती हो उत्तर प्रदेश हमारे देश का सर्वाधिक क्षेत्रफल में गेहूँ उत्पादन करने वाला राज्य है । इसके बाद क्रमशः मध्य प्रदेश, पंजाब व बिहार का नम्बर आता है। राजस्थान, महाराष्ट्र और हरियाणा हमारे देश में गेहूँ उगाने वाले अन्य प्रमुख राज्य है। गेहूँ की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह जान लें कि गेहूँ की फसल में कौन–कौन से रोगो से प्रभावित होती है । गेहूं की फसल में फफूंदी लगने से कई रोग लग जाते हैं, जिससे फसल को काफी नुकसान होता है।

इनमें से मुख्य तीन बीमारी महत्पूर्ण जो निम्न है:

(1) गेरुई – जिस प्रकार लोहे पर जंग लग जाता है ठीक उसी प्रकार गेहूं में गेरुई प्रकोप होता है। गेहूं में तीन प्रकार की गेरुई लगती है।

(अ) काली गेरुई (रतुआ): इसका प्रकोप देर से बोई गई फसल पर अधिक होता

है और यह गर्म व तर वातावरण में अधिक पनपता है (20°C से 30°C)।

साधारणतया यह मार्च के प्रथम सप्ताह में देखा जाता है। इसका प्रकोप तने पर होता है और तने के ऊपर लम्बे लाल भूरे रंग के हुए धब्बे बन जाते हैं रोग के अधिक प्रकोप में पौधों के अन्य भागो पर देखें जा सकते हैं। इस रोग का प्रकोप प्रायः कम ही देखा जाता है।

(ब) भूरी गेरुई (रतुआ): इस रोग से भी पत्तियों पर धब्बे बन जाते है जिनका रंग भूरा नारंगी होता है। ये वे बाद में काले हो जाते है और बिखरी हुई अवस्था में रहते हैं । रोग के अधिक प्रकोप के कारण ये धब्बे तने पर भी बन जाते हैं। यह रोग दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में दिखाई देता है जब फसल 5 या 6 सप्ताह की हो जाती है। इसके लिये 15° C से 25° C का तापक्रम अनुकूल है। इसका प्रकोप लगभग पूरे भारत में होता है।

(स) पीला गेरुई (हरदा): इस रोग के लक्षण पत्तियों पर धारियों में पीले धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं और रोग की अन्तिम अवस्था में काले पड़ जाते हैं। ये धब्बे रोग के अधिक बढ़ने पर तने और बालियों पर भी पहुंच जाते हैं। रोग अधिक ठण्डे और नम वातावरण में फैलता है। जब रोग बालियों पर पहुँच जाता है तो बालों में दाने नहीं बन पाते है। और बनते है तो वे हल्के कमजोर होते हैं।

गेरुई की रोकथाम

- सभी गेरुई की रोकथाम के लिये गेरुई रोधक किस्मों को उगाना हितकर रहता है जैसे पू० पी० 2003, यू०पी० 308, एच० जी० 2285 आदि व पहाड़ी क्षेत्रों के लिये गिरिजा आदि।
- डाइथेन एम–45 नामक दवाई का छिड़काव 0.2% के हिसाब से करना चाहिये। इसके लिये 100 लीटर पानी में 2 किग्रा दवाई डालनी चाहिये। जनवरी के अन्तिम या फरवरी के शुरु के सप्ताह में छिड़काव या 15 दिन के अन्तर पर 3 या 4 छिड़काव करने पड़ते हैं।

(2) कंडुआ रोग: यह बोज–जनित रोग है। इसमें जब पौधे में बालियाँ आती है तो उनमे दानों के स्थान पर काला चूर्ण

बन जाता है। यह हवा द्वारा दूसरी बालियों पर पहुंच जाता है और जब इन बालियों के बीजों को बोया जाता है तो पौधे पर फिर कालो चूर्ण–युक्त बालियां आती है अतः ये बीज स्वस्थ दिखाई देते हुए भी रोगी होते हैं।

कंडुआ रोग की रोकथाम

- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर बड़ी सावधानी के साथ थैले में बन्द करके मिट्टी में दबा देना चाहिये।
- प्रमाणित बीज ही बोने चाहिये और रोगरोधी किस्मों का बोना चाहिये।
- बीजों को 4 घण्टे भिगोने के बाद मई, जून को धूप में अच्छी तरह सूखाकर भण्डार में अगले वर्ष के लिये रखना चाहिए। बीज में 0–25 को दर से बोटावेक्स मिलाना चाहिये।

(3) बंट रोग

दो प्रकार के होते है–

(अ) करनाल बंट,

(ब) पहाड़ी बंट।

(अ) करनाल बंटः यह फफूंद के द्वारा लगने वाला रोग है। इस रोग में किसी विशेष में कुछ हो काल चूर्ण में बदलते है। इसके बीजाणु मिट्टी में गाये जाते है। नम वातावरण में रोग अधिक फैलता है।

(ब) पहाड़ी बंटः इस रोग में बालों के अन्दर कुछ फूले हुए बदरंग दाने बनते

हैं जिनमें चिपचिपा चूर्ण भरा रहता है। इस चूर्ण में सड़ी मछली जैसी गन्ध आती है।

रोग की रोकथाम

- रोग रोधी किस्मों का प्रमाणित वोज बोये
- पहाड़ी बट को रोकने के लिये वाइटावेक्स, एग्रोसन जो० एन० का प्रयोग भी लाभदायक सिद्ध हुआ है।
- फसल पर फूल आने के समय 2 डाइथेन एम–45 का छिड़काव लाभदायक रहता है।